नज़ाकत

सतवंत अहसास

NAZAQAT
(Ghazals)
by
Satwant Kalkat 'Ahsas'
597, Urban Estate, Secotr 39,
Chandigarh Road, Ludhiana.
Phone : 0161-2603188, +91 95697 40711

पहली वार : 2008

© लेखक

प्रकाशक :
स्वयं लेखक

स्मर्पण

पत्नि एवं मित्रगण के प्रोत्साहन को

जाने किस लिए ये लोग इस कदर हैरान थे
मेंहदी के अगर मेरे कफन पे निशान थे

और सब जहान में हैं ऐ खुदा आराम से
जो मिले हैं मुझे फक्त वो ही परेशान थे

मुझे राहे–जिन्दगी में लोग तो बहुत मिले
मगर कुछ तो हिन्दु थे, कुछ मुसलमान थे

अब तो नाकाम किया इस उम्रे–खिज़्र[1] ने
जब जवान थे तो कौन तीस मार खान थे

कितने मजबूर हुए आज हम हालात से
नासेह[2] बने मेरे जो खुद नादान थे

ग़ज़लगोई एक ज़ंजाल और आ पड़ा
अहले–जहां[3] पहले कहाँ थोड़ा परेशान थे

हम नज़र उठा न पाये रहन[4] करके पैरहन[5]
लोग बेच कर ज़मीर भी न पशेमान[6] थे

दफन 'अहसास' हुये कफ़न के बगैर ही
चलो कौन से वो बड़े आल्हा इन्सान थे

1. बुढ़ापा 2. सलाहकार 3. दुनिया वाले
4. गिरवी 5. पहरावा 6. शर्मिंदा

=

शाम ढली सुर्ख फल्क[1] अब्र[2] खूँचका[3] हुआ
यूँ लगे मेरा हश्र[4] खुदा पे है बयाँ हुआ

है तवक्को[5] मुझसे उसे अब इबादतों[6] की भी
बेहिसाब दे के अलम[7] जो कि खुद निहाँ[8] हुआ

आ भी जाईए कि अभी देर कौन सी हुई
मैं नहीं अभी तल्क सपुर्दे–आतिशां[9] हुआ

मल्क[10] एक रात अता कर ऐवज़े–खुल्द[11] में
आज महबूब मेरा मुझसे आश्ना[12] हुआ

किस खुशी में यार मुझे दे रहे मुबारिकें
दरे–जाने–जाना[13] पे मैं गोया दरबा[14] हुआ

जबसे कबूल फरमाई उसने मुर्शिदी[15]
देखिए तो कैसे हमें इश्के–दबिस्तां[16] हुआ

1. आकाश 2. बादल 3. खून के रंग का 4. हाल 5. आशा 6. पूजा 7. दुःख
8. छिप गया 9. अग्नि को भेंट 10. मल्क उल मौत (मौत का फरिशता) 11. स्वर्ग के बदले 12. मित्रता
13. महबूब का द्वार 14. द्वारपाल 15. शिक्षक की उपाधि 16. पाठशाला

तोहमतें सुखनवरी[1] में लाख कत्ले–आम की
गोया हुस्न न हुआ कोई चन्गोज़ खाँ हुआ

दागे–जिगर ज़ख्मे–दिल शौक से दिखाईए
हो के रहेंगे गुलाम अगरचे निशां हुआ

देख ज़रा कायनात[2] में है कितनी रौशनी
क्या हुआ जो 'अहसास' जल के फ़रोजां[3]हुआ

1. शायरी 2. संसार 3. रौशन

=

कामयाब सफर यादगार नहीं है
रास्ते में कोई अगर खार नहीं है

नसीब ही करे है कुछ ख्वारी वगर्ना
कौन शख्स है जो समझदार नहीं है

वहम के तहत करें तो बात और है
खुदा इबादतों**1** का तलबगार**2** नहीं है

उठाई कसम जान की तो बोले दफातन**3**
ज़िन्दगी का तेरी ऐतबार नहीं है

फित्नागरी**4** पे ज़ब्त**5** अगर नहीं उन्हें
दिल पे हमें भी तो इख्तयार नहीं है

कोई असर दवा या दुआ**6** न करेगी
रिन्द**7** हैं यहाँ कोई बीमार नहीं है

दैर**8** की तरफ न जायें और क्या करें
जाम ही अगरचे दरकार नहीं है

एक लम्हे के लिए हुए हो जल्वारेज़
सितम ही तो कोई दीदार नहीं है

1. पूजा 2. इच्छुक 3. एक दम 4. झगड़े की आदत
5. संयम 6. प्रार्थना 7. शराबी 8. मन्दिर

प्यार भी करोगे जहाँ से भी डरोगे
जवाब तेरा कोई ऐ निगार[1] नहीं है

रंज है कोई तो बताया तो चाहिए
घर हमारा आसमां के पार नहीं है

हदे–जनूँ तल्क ये चाहे शौक पालिए
सुखनवरी कोई रोज़गार नहीं है

दिल में उतर के ही 'अहसास' रहेगी
कलम है जनाब ये कटार नहीं है

1. सुन्दर

=

नज़र उनकी मेहरबान और कहीं है
चमन किसी का वीरान और कहीं है

मेरे वास्ते हैं उनपे सिर्फ सब्ज़बाग
हो रही निसार[1] जान और कहीं है

समझ से परे तेरा वफा का फ़लसफ़ा
दिल तो मुझ पे है ईमान और कहीं है

नज़र आ रहे जो सब दिये जहान ने
तेरे ज़ख्म का निशान और कहीं है

मरा सर खपा खपा फरिशता मौत का
जिस्म है यहाँ तो जान और कहीं है

कौन सा पता बताऊँ उनका आपको
घर है मेरा दिल मकान और कहीं है

आश्कार[2] हूँ जहाँ पे पुर–सकून मैं
उफनता हुआ तूफान और कहीं है

आ तो रहा है पैग़ाम उनका मेरे पास
मगर दी हुई ज़बान और कहीं है

1. कुर्बान 2. प्रकट

सू–ए–खुल्द[1] मुझको खींचते हैं फरिशते
मुझको हो रहा गुमान और कहीं है

उठा के तेग़ हाथ को न देना जहमतें[2]
मेरे कत्ल का सामान और कहीं है

मीठी मीठी बातें कहीं और हो रहीं
खिंच रही मगर कमान और कहीं है

इस बाज़ार की न 'अहसास' खाक़ छान
उनकी वफा की दुकान और कहीं है

1. स्वर्ग की ओर 2. कष्ट

=

चाहो तो गिला करना बेशक शिकवा करना
शक करने से बेहतर मरने की दुआ करना

तुम बन के रहो मेरे यह इतना नहीं लाज़िम
किसी और के हो जाओ ऐसी न खता[1] करना

मिलना कभी फुरसत में किसी दश्त[2] या सहरा[3] में
पल दो पल का मिलना है ज़ख्म हरा करना

कैसे न कोई तड़पे दिलदार के जाने से
आसां तो नहीं खूँ से नाखुन को जुदा करना

धोखा यह जवानी है फानी[4] ज़िन्दगानी है
फिर क्या खुदगर्ज़ी में औरों का बुरा करना

सोचूँ जो सितम तेरे इक बर्क[5] सी लहराये
मन्जूर नहीं फिर भी तुझसे शिकवा करना

इस इश्क ने कर डाले बेखौफ़ ज़माने से
आदत थी कभी जिनकी आहट से डरा करना

'अहसास' दिया तुमने वो जाते हुए जो फूल
वो काम किया इसने काँटों ने भी क्या करना

1. गलती 2. जंगल 3. रेगिस्तान 4. नाशवान
5. बिजली

=

देते नही जवाब वो मेरे आदाब का
बढ़ता है कितना देखिए रुतबा जनाब का

आँखें मिला के दिल को मेरे जान जाओगे
आँखे खुलासा जानिये दिल की किताब का

देखा किया मैं बाम[1] तेरी इतनी उमीद में
होगा खयाल आपको कुछ तो सबाब[2] का

दीदारे–यार आज कल होता है इस तरह
जैसे कि जल्वा ईद में हो माहताब[3] का

छोटा सा दिल ही बस तेरा पत्थर का बना है
बाकी जिस्म तमाम है गुँचा गुलाब का

इखलाक कद्रो–कीमतें ज़मीरो–सीरतें
है बयाँ हकीकतों का या ज़िक्र ख्वाब का

रहमत[4] के लिए चाहिए उसको इबादतें[5]
परतव[6] खुदा में है किसी बिगड़े नवाब का

1. छत 2. पुन्य 3. चाँद 4. कृपा 5. पूजा
6. अक्स

पूजा भी है नमाज़ भी मय भी शबाब भी
क्या क्या करूँ हिसाब मैं किस किस अजाब[1] का

उस महफिले–सुखन[2] की तरह अपनी ज़िन्दगी
न ज़िक्र जिसमें हुस्न का और न शराब का

'अहसास' को वो ढूँढते हैं राहे–इश्क में
अरसा हुआ कत्ल हुए खाना–खराब का

1. मुसीबत 2. शायरी की महफिल

=

खिदमत में होती हैं हूरें और फरिशते सब होते हैं
देख तसव्वर[1] की दुनियां में कितने खेल अजब होते हैं

रोज़ सुबह करते हैं तौबा शाम को फिर से बादाख्वारी[2]
शर्मशार सुबह को लेकिन शाम को तश्ना–लब[3] होते हैं

आज वसल[4] का वादा है पर दिल में इक बेचैनी सी है
सयासतदाँ और हुस्न के मालिक वादावफा ही कब होते हैं

दानिशवर सब लोग जहाँ के अहमक लगते दो मौकों पे
एक इबादतगाह[5] में दूजे ग़र्क इश्क में जब होते हैं

आशिक हैं बन्दे[6] तो नहीं 'अहसास' क्या फिर मजबूरी है
करने रोज़ खुशमद उनकी दर पे रोज़ तलब होते हैं

1. कल्पना 2. शराबनोशी 3. प्यासे 4. मिलन
5. पूजाघर 6. गुलाम

=

शिकवे शिकायतें करते नहीं हैं
यूँ ही घुटन से मरते नहीं हैं

बेकार छत है घर पे तुम्हारे
कभी चहल कदमी करते नहीं है

करते कत्ल वो अदाओं से अपनी
मासूम इतने मुकरते नहीं हैं

बड़े नाज़ से दिल को पाला है हमने
क्यों चोट करते सिहरते नहीं हैं

करें क्या इबादत खुदा बदगुमां की
हालात यूँ ही सुधरते नहीं हैं

खौफे–खुदा से की जब से तौबा
तबसे गुनाह कोई करते नहीं हैं

गज़लसरा 'अहसास' लगी बिन
तर्क गले से उतरते नही हैं

=

क्या समझेंगे लोग दीवाने मज़ा है जो तन्हाई का
मिलते रहो तसव्वर[1] में और खौफ नहीं रुसवाई[2] का

दिल क्या शै है जान भी देंगे माँगो मगर मोहब्बत से
चीज़ तुम्हारी है तो फिर क्या हासिल ज़ोर अज़माई का

बड़े बड़े दावे थे जिनके साथ उम्र का देने के
ऐन वक्त पर ऐसा चेहरा ज्यों दुल्हन शर्माई का

बेगाने तो बेगाने थे कैसे सुनते चीख पुकार
अपनों ने आकर हक छीना हमसे हाल दुहाई का

कहाँ खुदा की याद आती थी अमन था जब तक ज़ीस्त[3]में
शुक्रगुज़ार तो होना होगा इस जाँ पे बन आई का

आते आते आ ही गया ढब उनको बात बनाने का
असर हुआ है उनपे आखिर हमसे आँख लगाई का

दुनिया फानी[4] में भी इतना दिल रम जाना ठीक नहीं
देख दूर से चन्द रोज. ये मेला आवाजाई का

करते रहे गुज़ारिश[5] बरसों पाई लेकिन बस फटकार
छीन झपट 'अहसास' करो अब दौर है ये ढीठाई का

1. कल्पना 2. बदनामी 3. जिन्दगी 4. नााशवान 5. विनती

=

रहम मुझको आ रहा है उनके हाल पे
बहस कर रहे हैं वफा के सवाल पे

जब भी चली बात महफिलों में जफा की
खत्म हो गई है आपकी मिसाल पे

खत्म ग़र न हो गई जो इन्तज़ार में
वार देंगे ज़िन्दगी शबे–विसाल[1] पे

आज क्या असर मेरी वफा दिखायेगी
रक्स[2] कर रहे हैं वो ग़ैरों की ताल पे

कुछ न कुछ तो है जो आप ने लिखा लिया
हरफ पहला अपने नाम का रुमाल पे

नाक पोंछना तो सीख लो आराम से
ज़िरह करना फिर हराम पे हलाल पे

फिक्र करे क्या खुदा भी कायनात[3] की
कसीदा[4] तो पढ़ ले तेरे जमाल पे

भागने को राह कोई फिर न मिलेगी
अगर 'अहसास' आ गये धमाल पे

1. मिलन रात्रि 2. नृत्य 3. संसार 4. प्रशंसा की कविता

=

अब सलूक उनका हुआ सनम[1] की तरह
बात भी करें तो एक करम[2] की तरह

खेल खेल में न हाथ फूँक बैठना
आग नहीं मेरे दिले–नरम की तरह

मयकशी पे मेरी खफा यूँ न होइये
दिल भी लड़खड़ा न जाये कदम की तरह

ज़िन्दगी से आपकी तो जा रहा हूँ मैं
दिल में रहूँगा ज़रूर भरम की तरह

जवाहरो–गुहर[3] हैं सभी बेशकीमती
कोई आँख की न मगर शर्म की तरह

जो भी दिल में है यहाँ वही जुबां पे है
मैकदा लगे है मुझे हरम[5] की तरह

जीत जहाँ से न 'अहसास' पाओगे
तेग़ भी पकड़ लो चाहे कलम की तरह

1. बुत 2. मेहरबानी 3. मोती 4. काबा

=

खैर मकदम[1] को मैं खुद न आ सका, गुस्ताखी माफ़
ग़ोर[2] का पत्थर नहीं हटा सका, गुस्ताखी माफ़

कितनी दानाई[3] से सुल्झाईं खल्क[4] की उलझनें
एक तेरी जुल्फ न सुलझा सका, गुस्ताखी माफ़

याद हैं मुझे वो सभी बीती रातें चाँदनी
जुल्म तग़ाफुल[5] का न भुला सका, गुस्ताखी माफ़

शुक्र ऐ खुदा तेरा, अम्बारे–गम[6] है छोटा सा
इस से बढ़ के और न तू ला सका, गुस्ताखी माफ़

कौन सी है शै जो नहीं थी तेरे नसीब में
दूर पारसाई[7] से न जा सका, गुस्ताखी माफ़

ज़रा सी खता[8] पे महरूम खुल्द[9] से किया
क्या सज़ा से बात मनवा सका ? गुस्ताखी माफ़

बुलन्दी–ए–बेगैरती[10] इस दौर की थी सामने
नज़र 'अहसास' न उठा सका, गुस्ताखी माफ़

1. स्वागत 2. कब्र 3. समझदारी 4. संसार 5. उदासीनता, उपेक्षा 6. दुखों का ढेर 7. पवित्रता
8. गल्ती 9. स्वर्ग 10. स्वाभिमान हीनता का शिखर

=

ब्दल लूँ मैं मुस्कराहटों में अभी आह को
आ रहे हैं खुद वो सुना है मेरे जिबाह को

वो हैं मसरूफ[1] अभी देखने में आईना
देंगे वो तवज्जो बाद में मेरी कराह को

फब्तियाँ वो कसें हुआ रू–स्याह[2] मैं अगर
कौन समझाये भला उस रूह–स्याह को

सब उठा रहे हैं उंगलियां मेरे ईमान पे
कोई कोसता नहीं मगर तेरी निगाह को

हाये री मासूमीयत कि देख के वो ज़ख्मे दिल
बदहवास चल दिये हैं ढूँढने ज़राह[3] को

ग़ज़लगोई के सबब हुए हैं तुमसे वो खफा
चाट बैठ कर तू अब कोरी वाह वाह को

खत्म हो शैतानीयत कायनात[4] से तमाम
अगर इन्सान याद रख ले फनाह को

ठेल के सफीना[5] 'अहसास' बह्रे–इश्क[6] में
फिक्रे–काशाना[7] हुआ है मलंग शाह को

1. व्यस्त 2. मुँह काला 3. घाव उपचारक 4. संसार
5. नाव 6. प्रेम सागर 7. घर की चिंता

=

कायनात अगरचे नूरानी चाहिए
दूर आदमी से बेईमानी चाहिए

और बहुत से मिलेंगे मौके वसल[1] के
ज़िन्दगी मगर ये चलती जानी चाहिए

नहीं लाज़िमी कि मुकाबिल[2] ही रहें वो
खुनक[3] सी हवा उधर से आनी चाहिए

बददुआ तो दे रहे हो हमको मौत की
किसे तेरे बिन ये ज़िंदगानी चाहिए

काफी है पैमाना लबे–यार का छुआ
हमको फिर्दौस[4] न हूरानी[5] चाहिए

तुमसे न करेंगे तगाफुल[6] का हम गिला
जान इस तरह भी कभी जानी चाहिए

काश मिले फिर से बसर की जो ज़िन्दगी
इब्तदा[7] से फिर वही कहानी चाहिए

पीर 'अहसास' को सतायें जा के आज
कभी कोई काम तो शैतानी चाहिए

1. मिलन 2. सामने 3. ठंडी 4. स्वर्ग 5. परियों वाला
6. उदासीनता 7. आरम्भ

=

कभी मजबूर हो दिल से शिकायत लब पे लाते हैं
कयामत है कि सुन ज़िक्रे–जफा वो रूठ जाते हैं

है ये दस्तूर फितरत[1] का चलेगा ज़ोर फिर किसका
दिले–शायर चमन के फूल लू से मुरझा जाते हैं

सुना है आँसू पीने से दर्द और कुछ बढ़ता है
ये कितना कारगर है नुस्खा हम भी आजमाते हैं

बुलाया लाख उनको वो न लेकिन आये मेरे घर
यही अहसान क्या कम है तसव्वर[2] में तो आते हैं

कहां मुमकिन है ये कि मैं बराबर उनके हो जाऊँ
न फूँकें वो बुराई न अच्छाई हम जलाते हैं

ज़रूरत है हमारी भी तुम्हारी भी कि वसल[3] हो
तो क्यों फिर नाक चढ़ती है अगर हम पास आते हैं

उठाते हैं वो नाजायज़ शराफत मेरी का फायदा
करूं मैं इल्तजा[4] तो वो मुझे ठेंगा दिखाते हैं

निकलते आ रहे हैं देख ले 'अहसास' उनके पर
मैं जितना खिँचता आता हुँ वो उतने खिँचते जाते हैं

1. प्रकृति 2. ख्याल 3. मिलन 4. मिन्नत

=

दिन अभी रहा नहीं रात भी हुई नहीं
कैसे कुफ्र तोल दूँ[1] कि लब पे तश्नगी[2] नहीं

और किसी वक्त गौर करेंगे गुनाह पर
मयकशी के वक्त पारसाई[3] छूटती नहीं

यों ही नहीं हो गया है टुकड़े टुकड़े मेरा दिल
सिर्फ एक दिल में बसर उनकी खू[4] रही नहीं

इस फिराक का तो सिर्फ मर्ग[5] ही इलाज है
मगर दीद के बगैर जान निकलती नहीं

गये थे जनूँ में करने उनसे जफा का गिला
रूबरू[6] हुए तो यह ज़बान हिल सकी नहीं

एक नज़र कातिलाना का मैं तल्बगार हूँ
तीरों तलवारों खंजरों की तो कमी नहीं

तड़प का ऐ चारागर[7] क्यों मैं करवाऊँ इलाज
मेरी तड़प के बिना मिले उन्हें खुशी नहीं

दर्द के बगैर 'अहसास' कैसी शायरी
आग कभी भी जले बगैर दहकती नहीं

1. झूठ बोल दूँ 2. प्यास 3. पवित्रता 4. आदत 5. मौत
6. सामने 7. उपचारक

=

मेहरबानी उनकी मुझ पे आज खास है
बिगड़ी हुई है गैर से मेरा कयास[1] है

पास रहें भले न करें दुआ सलाम
उनकी बेतकल्लुफी में भी मिठास है

क्यों न हों अजीज़[2] हमको तन्हाईयां[3]
तू लगे है जैसे कहीं आस पास है

खाली लौटने को मल्क[4] मजबूर है
वो जो तेरी दीद[5] की अभी प्यास है

जिसने की दुआ हमेशा मेरी मौत की
सबसे बढ़के आज वही बदहवास है

आप जो गये चमन वीरान कर गये
दिल फिराक[6] में अभी तल्क उदास है

कम हैं उनके लिए कुल जहाँ की दौलतें
अपनी फाकामस्ती[7]कहाँ उनको रास है

बहर वजन काफिया में कैद है वजूद[8]
रूह ग़ज़ल की तो एक अहसास है

1. अन्दाजा 2. प्रिय 3. एकाँत 4. मौत का फरिशता
5. दर्शन 6. बिरह 7. भुखमरी 8. अस्तित्व

=

रूह की बुलन्द सबसे आवाज़ है
फल्क[1] से परे ज़हन[2] की परवाज़[3] है

खुद इबादतों का मोहताज है खुदा
फिर भी किस लिए वो इस कद्र फराज़[4]है

अपने ज़मीर[5] से ज़रा सा डर के रहा कर
सारे स्फेद स्याह का वो हमराज़ है

इख्लाक की कद्र वो खाक़ जान पाएंगे
अपनी पुरकारियों[6] पे जिनको नाज़ है

पहले तो किया चाक खंजरों से पैरहन[7]
अब पूछते हैं क्या तू मुझसे नाराज़ है

होना जिहाद था तुम्हारी बेवफाई पे
अपने तहमुल[8] को ज़रा ऐतराज़ है

1. आकाश 2. मन 3. उड़ान 4. बुलन्द, ऊँचा
5. अन्तरात्मा6. चलाकियां 7. पहरावा 8. सहनशीलता

मेरा नुक्ता–ए–नज़र ही बस दरुस्त है
अहमकों की सोच का यह अन्दाज़ है

उस काफिले में आ शरीक हो गया हूँ मैं
हर शख्स जिस में महरूमे–इम्तियाज़[1] है

चोट पिंदारे[2]–ए–'अहसास' पे न कर
ग़ैरत[3] के मामले में तो वो जां बाज़ है

1. समझहीन 2. अहम 3. स्वाभिमान

=

आईना

मिले दश्त[1] से निजात[2]
ज़रा सी है ज़िंदगी

बह्रे–हुस्न[3] में तू एक बेशकीमती गुहर[4]
बन किसी गले का हार कोई कद्रदान ढूँढ

हसरते–परवाज़[5] दफन दिल में क्यों कर रहे
दामने–ज़मीन छोड़ कोई आसमान ढूँढ

मकसदे–तनवीर[6] है तजल्ली–ए–रुखे–बहार[7]
राज़े–बेखुदी–ए–मय[8] मिज़ां[9] के दरम्यान ढूँढ

एक आफताब[10] कुल आलम[11] को बख्शे रौशनी
माहताब[12] जो हसीन बना दे जहान ढूँढ

खिज़ां के दौरान कहां मिलेगी बादे–बहार[13]
निकहते–बहार[14] हसीं दौर के दौरान ढूँढ

दैरो–हरम[15] से मिली पारसाई[16] की तालीम
सिखा दे इन्सानियत जो ऐसा दबिस्तान[17] ढूँढ

उमड़ती घटाएं हों तो क्या संभल सके तबअ[18]
कर सबू[19] का इन्तज़ाम कोई मेहमान ढूँढ

सकूं की जुस्तजू में यूँ न दर ब दर की खाक छान
कर ईमान हमसफर दश्त न वीरान ढूँढ

डस गया है साँप
ज़हर का इलाज

1. जंगल 2. छुटकारा 3. सुन्दरता का सागर 4. मोती 5. उड़ान की इच्छा 6. रौशनी का मकसद 7. बहार के चेहरे की रौशनी 8. शराब की मदहोशी का राज़ 9. पल्कें 10. सूर्य 11. संसार 12. चन्द्रमा 13. बहार वाली हवा 14. बहार की खुश्बू 15. मन्दिर और काबा 16. पवित्रता 17. पाठशाला 18. तबीयत 19. शराब का बर्तन

फ़रियाद

कोई गुलिस्तान ढूँढ
हयात[1] का सामान ढूँढ

एक पैगम्बर यहां उठा रहा है और सर
पकड़ कहीं से सलीब कत्ल का मैदान ढूँढ

अहले–जहां[2] है ज़रा सा दर्दे–दिल जवाल[3] पे
कर छुरी का इन्तज़ाम कोई नमकदान ढूँढ

हो रही है किश्ते–अमन[4] खिरमनों[5] में फिर जवान
आग का सैलाब भेज मलख[6] का तूफान ढूँढ

हो रहे हैं एक मुश्त फिर से काशाने[7] में लोग
मजहब की बना दीवार नसल का हैवान ढूँढ

सड़ने लगी है यहाँ लाशे–इन्सानियत
देख कोई मुर्दघाट कोई शमशान ढूँढ

ऊँघने लगे हैं सभी रहबराने–कारवाँ[8]
रहज़नी[9] का फिक्र छोड़ कोई शबिस्तान[10] ढूँढ

जलेंगे अगरचे घर उठेगा ज़रूर शोर
डाल पंबा[11] कान में शराब की दुकान ढूँढ

बिलबिला रहे हैं भूख से लाचार भेड़िए
रहम वहशियों पे कर ज़रा हिन्दुस्तान ढूँढ

इख्लाके–इन्सान को
'अहसास' का दीवान ढूँढ

1. जीवन 2. दुनिया वाले 3. पत्न 4. शान्ति की फसल 5. खेत 6. टिड्डी दल 7. घर 8. काफिले के मार्गदर्शक 9. लूट 10. शयन कक्ष 11. रुई

होते ही इन्कार मरेंगे होंगे अगर ख्वार मरेंगे
रोज़ हश्र[1] का आते आते जाने कितनी बार मरेंगे

मर जायेंगे बेसब्री से गर सरका न पर्दा रुख से
और गिरेगी जब ये ज़ालिम चिलमन[2] की दीवार मरेंगे

मरता हुँ नज़दीक से निकलें अपनी नज़रें नीची करके
लेकिन जिस दिन हो जायेंगी उनसे आँखें चार मरेंगे

ज़ाहिर हों आँखों से जज़्बे तोड़ें खामोशी की जिन्दां[3]
फँस कर जल्वों के दरिया में क्योकर बिन पत्वार मरेंगे

बड़े बड़े हैं जवां मर्द जो एक अकेले दस पे भारी
तिरशी नज़रों के तीरों की होगी जब बौशार मरेंगे

जब भी किया यकीन किसी पे हासिल फक्त फरेब हुआ है
देख ज़माने की खुदग़र्ज़ी हो कर हम बेज़ार मरेंगे

मरते मरते जी उठे जब देखा खलल दिमाग के अन्दर
क्या मरना बन कर बेग़ैरत थोड़ा सा दमदार मरेंगे

1. कयामत 2. पर्दा 3. जेल

वैसे तो कुमरी[1] की तरह अमन पसन्द मिज़ाज है अपना
फिर भी जंग अगर हो नाज़िल दुश्मन को ललकार मरेंगे

कैसे मार सकोगे हमको जब तक मंज़िल न पा जायें
पुर्ज़ा पुर्ज़ा कट जायेंगे फिर भी न सरकार मरेंगे

ऐसे ही गर मर जायेंगे दो मोती न मिल पायेंगे
जिस दिन अपने मर जाने से होगी हाहाकार मरेंगे

मरना है गर मर भी जाओ क्यों करते हो आनाकानी
मुद्दत हो गई सुनते सुनते बस अबके इस बार मरेंगे

छोड़ अभी मरने की बातें कर कोई तदबीर[2] सुखन[3] की
खुद 'अहसास' ज़माने वाले सुन सुन कर अश्आर[4] मरेंगे

1. एक पक्षी 2. यत्न 3. शायरी 4. शेअर

=

हाले दिल जब उन्हे सुनाया रो रो कर
जाने चैन कहाँ से पाया रो रो कर

रोज़ सताया करते थे वो हँस हँस कर
हमने भी उनको तड़पाया रो रो कर

बुरा किया जो कल शब आये ख्वाबों में
खुद रोये और हमें रुलाया रो रो कर

एक उन्हीं के रुख[1] पे शिकन नहीं देखी
हमको खल्क[2]ने जब दफनाया रो रो कर

दर्दो–गम दिल में ही रखना ठीक नहीं
कोयल ने हमको समझाया रो रो कर

बर्क[3] कफ़न में गिरी जो मेरे यारों ने
डोली में उसको बतलाया रो रो कर

देख के उनक I आलमे–रुखे–इज़्तराब[4]
और ज्यादा दिल घबराया रो रो कर

1. चेहरा 2. दुनिया 3. बिजली 4. चेहरे की बेचैनी का हाल

होगा कुल आलम अश्कों[1] पे खन्दाज़न[2]
रुसवा न हो यार खुदाया रो रो कर

फिर क्यों रोने से इन्सान गुरेज़ करे
आदम जब धरती पर आया रो रो कर

आज गये हैं पुरसिश[3] को वो गैरों की
हमने भी तूफान उठाया रो रो कर

तुमसे तो 'अहसास' हुई है तर्के–वफा[4]
हर गुँचा है क्यों मुरझाया रो रो कर

1. आँसू 2. हँसना 3. हाल पूछना 4. वफा का अंत

=

बद–दुआ का आ ज़रा असर तो देख ले
बेकफ़न पड़ा हूँ इक नज़र तो देख ले

छोड़ पूछना मेरे ज़ख्मे–जबीं[1] का राज़
जा, जा के ज़रा अपना संगे–दर[2]तो देख ले

पुर जोश जा रहे तो हो उठाने तेग़ को
उठ पायेगी भी क्या ज़रा कमर तो देख ले

फिर पूछना है जोश कितना खूने जिगर में
कितनी है, पहले, आँख मेरी तर तो देख ले

मांगी दुआ उन्होंने मेरी उम्र हो दराज
है दवा मेरे हाथ या ज़हर तो देख ले

माना बयाबाँ[3] दश्त[4] है पुरखार[5] रास्ता
है कौन तेरे साथ हमसफर तो देख ले

ज़ाहिद[6] मुझे दिखाना बाद में बहिशत तू
है मैकदे में जो ज़रा मंज़र[7] तो देख ले

'अहसास' मर तो जायेगा बरसाते–संग[8] से
अहले–जहाँ[9]की अक्ल पे पत्थर तो देख ले

1. माथे का ज़ख्म 2. दहलीज 3. सुनसान 4. जंगल 5. काँटों भरा 6. तपस्वी
7. दृश्य 8. पत्थरों की बरसात 9. दुनिया वाले

=

किस्मत में था कि डूबूँ जब साहिल[1] करीब हो
मेरी तरह न दुश्मन कोई बदनसीब हो

है तमाम इल्म बोदा[2] दानाई पास न हो
अच्छा बजुर्ग होना है शर्त तहज़ीब हो

करता हुँ बादानोशी[3] याद और भी सताये
तू ही बता दे आ के क्या अब तरकीब हो

न मुहब्बतों की चाँदी न सोना सकून[4] का ही
तेरी तरह न दुनियां में कोई ग़रीब हो

रह जाये धरी कोशिश किस्मत न साथ गर दे
भूने हुए हैं उगते गर हम दम नसीब हो

गमे–हिज्र[5] से अभी तो कुछ उबरने लगा हूँ
लुट जाने दूँ तसव्वर[6] अजी तुम भी अजीब हो

'अहसास' उस चमन का हाफिज़[7] खुदा ही जानो
हर फूल का जहां पे खुद माली रकीब[8] हो

1. किनारा 2. खोखला 3. मयकशी 4. चैन 5. विरह की पीड़ा
6. ख्याल 7. रक्षक 8. दुश्मन

=

क्यों ठंड किस्मतों पे हँसती सुबह सुबह
गर बर्फ में न लगती हस्ती[1] सुबह सुबह

है पहला काम दिन का तस्वीर तेरी देखूं
जैसे कि खुर[2] को धरती तरसती सुबह सुबह

वो और होंगे जिनकी रंगीन होंगी रातें
ये लाश तो कफन में कसती सुबह सुबह

जागे है बेखुदी से सुबह को खल्क[3] ज़ाहिद[4]
तुम पे ये आई कैसी मस्ती सुबह सुबह

जाता हूँ उठ के मन्दिर क्या पाक है बहाना
मिलती ह ै रास्ते में ससती सुबह सुबह

न हो हैरान कैसे सब शब का राज़ जानूं
चेहरे से तेरे झलके पस्ती सुबह सुबह

पीते हैं शाम को तो समझें वो शान इसमें
फिर क्या ये दोस्तों को डसती सुबह सुबह

1. शरीर, ज़िन्दगी 2. सूर्य 3. संसार 4. तपस्वी

शब[1] का भी कर्ज़ था कुछ हमको खबर नहीं है
है याद जो लिया था दस्ती सुबह सुबह

रहती है दूर शब को वक्ते–सागर–ख्वारी[2]
फिर क्यों शर्म शिकंजा कसती सुबह सुबह

'अहसास' किया हमने शब में इज़हारे–उल्फत[3]
अब जानती है सारी बसती सुबह सुबह

1. रात्रि 2. शराब पीते समय 3. प्रेम का इज़हार

=

मेरे दर्दे–इश्क की दास्तां दुनिया को हैं वो सुना रहे
मेरा दर्द और बढ़ा रहें क्यों मेरा तमाशा बना रहे

अगर आये ज़िक्र मेरा कभी तो जताना था कोई अजनबी
मेरा वकार भी कम न हो और तेरा सर भी उठा रहे

गर हो सताने को तेरा दिल मुझे ख्वाब में कभी आ के मिल
तुझको न कुछ तकलीफ हो और मेरा ज़ख्म हरा रहे

मुझे घर की थी बड़ी आरजू[1] अब खत्म हो गई जुस्तजू[2]
अब बदनसीबी से कहो परे गोर[3] से ही ज़रा रहे

तुझे है कसम ओ मेरे सनम मुझे दे न तू अपनी कसम
तेरी आबरू नहीं होगी कम कोई दर पे अगर पड़ा रहे

मुझे हुक्म था मिल बाँट खा वाइज़[4] ज़रा रिन्दों मे आ
ता कि हो तामीले–हुक्म[5] भी और मैकदा[6] भी सजा रहे

तुझे घेर लें न ये ग़ैरतें ये खड़ी करें न मुसीबतें
'अहसास' को है जनूने–सर वो घिरा है गर तो घिरा रहे

1. चाहत 2. तलाश 3. कब्र 4. धर्म प्रचारक
5. आदेश पालना 6. शराबखाना

=

देख उनको बज़्म में दिल मेरा घबराने लगा
आज मुझको फिर से गुज़रा वक्त याद आने लगा

थे वो मुझसे आशना[1] कि गैर से हो दिल्लगी
मैं ही अहमक था जो बिन समझे ही इतराने लगा

हो लिया था साथ मजनूँ के तमाशा देखने
संग उठे तो घुन गंदम[2] के साथ पिस जाने लगा

था ज़माना साथ जब तक जेब में थी गर्मियां
मुफलिसी[3] में मेरा साया मुझ से कतराने लगा

कुछ दिनों के बाद ही क्या हाल पूछे चारागर[4]
इतनी जल्दी तो नहीं ये ज़ख्म भर जाने लगा

खूब की तकरीर उसने उन्वाने[5]–इख्लाक पे
आया ज़िक्रे अमल तो बत्तीसी दिखलाने लगा

था ना उसके पास दिल ही और वो करता भी क्या
नाज़ नखरों से ही मेरे दिल को बहलाने लगा

1. मित्र 2. गेहूँ 3. गरीबी 4. उपचारक 5. शीर्षक

एक मुद्दत से हूँ सम्भाले हुए मैं उनकी याद
मयकशी के बिन ये सरमाया भी लुट जाने लगा

न तो टपके उसके आँसू न ही फूटी मुँह से आह
मुझको जब ज़ालिम ज़माना आग दिखलाने लगा

खूबरूओं[1] का था तू 'अहसास' इतना कद्रदान
आज ऐसा क्या हुआ जो देख घबराने लगा

1. सुंदरमुखी

=

दिल में न दफन कर लूँ अरमाँ तो क्या करूँ
हूँ दिल के मामले में नादां तो क्या करूँ

नादां नहीं था इतना ठगता मुझे ज़माना
गर यार ही लगायें चूना तो क्या करूँ

मुझे खुल्द[1] तो अता है लेकिन है जेब खाली
अब मांगता है रिश्वत रिज़्वां[2] तो क्या करूँ

आया था बन्दगी को न लाया साथ शीशा[3]
अब सूखने लगी है ये जुबां तो क्या करूँ

सौ मिन्नतों से पाया साथ उनका उम्र भरका
हर रोज़ अब जतायें अहसां तो क्या करूँ

उस रश्के–माह[4] की न कभी करूँ कदम–बोसी[5]
बस में न अगर आये तमन्ना तो क्या करूँ

1. स्वर्ग 2. स्वर्ग का द्वारपाल 3. बोतल 4. चाँद जैसे गर्वित 5. पैर चूमना

था शौक ज़िन्दगी को देखूं करीब से मैं
अब लोग कहें इसको मरना तो क्या करूँ

क्या बन्दगी से हासिल होता खुदा से बढ़ कर
गर वो भी मिला गम में गरकां[1] तो क्या करूँ

करूँ मयकशी से तौबा और कसम भी उठा लूँ
'अहसास' तुझ सा आये मेहमां तो क्या करूँ

1. डूबा हुआ

=

सनी मेरे खूँ से दहलीज़ नाज़नीन[1] की
देख रही है ये भीड़ क्यों तमाशबीन की

फल्क[2] ने उतारीं मेरे लिए परेशानियाँ
हमने भी ज़िन्दगी की मज़े से तौहीन की

दौरे–मौजूदा में रवानी–ए–इश्क देखिए
शाम कहीं पे तो रात कहीं पे रंगीन की

छोड़ तहज़ीब अपनी सू–ए–मगरिब[3] गया
कीचड़ में टाँग जैसे अन्धे शौकीन की

एक दरबान ला बिठाय ा दरे–हुस्न पे
खड़ी की है उन्होनें दीवार गोया चीन की

आबो–हवा शहर की पसंद साँप अब करें
फिक्र हो रही है मुझे अपने आस्तीन की

फल्क हुआ सुर्ख डूबने से आफताब[4] के
हमने भी लाल अपने खून से ज़मीन की

उम्रे–खिज़्र[5]देख 'अहसास' किस कद्र जवान
मुँह में नहीं दाँत और चाह माहजबीन[6] की

1. सुन्दर 2. आकाश 3. पश्चिम की ओर 4. सूर्य
5. बुढापा 6. चँद्रमा जैसे माथे वाले

=

महफिल से उसने मुझको आज उठाया ताने दे
दिल का हाल सुनाऊँगा आहें तो थम जाने दे

खबर तुम्हारी भी लेंगे थोड़ा सब्र खुदाया कर
कहाँ अभी मुझको फुर्सत रूठा यार मनाने दे

दर से क्यों हटवाते हो मुझको दुनिया के डर से
दो लम्हों का हूँ मेहमां यहीं मुझे मर जाने दे

खुद पे ज़ब्त[1] नहीं उनको मैं भी आखिर क्यों सुधरूँ
फूँक तमाशा देखूँगा घर को तो बन जाने दे

दिल तो मुझको ही देंगे हक तो आखिर मेरा है
कर लेने दे कुछ तफरीह इक दो रोज़ सताने दे

कही आपने सौ बातें मैने कहाँ बुरा माना
उठ के चले कहाँ वाइज़[2] बोतल तो खुल जाने दे

हैरां हो न ए साकी मेरी इस खामोशी पे
बाँध सभी खुद टूटेंगे पैमाना भर जाने दे

पूछें कारगुज़ारी लोग दिखला दे मन्दिर मस्जिद
कायम होश रहें फिर भी खोल उन्हें मयखाने दे

खुद हल होंगे सब मसले आ जायें 'अहसास' ज़रा
अन्धेरा डर भागेगा सूरज को उग आने दे

1. संयम 2. धर्म प्रचारक

=

तंग है फ़िज़ा–ए–आलम[1] वुसअत[2] मुझे न दे
बदनाम है जहां[3] में उल्फत मुझे न दे

गंज–हाय–गम[4] से हस्ती[5] दबकर हुई है पिन्हा[6]
अब और दर्दे–दिल की दौलत मुझे न दे

है मिसाले–बला[7] बिस्तर वक्ते–अख्तर–शुमारी[8]
बुते–मरमरी[9] से ताअलुक किस्मत मुझे न दे

दिल इश्क से बावस्ता नज़रें हुस्न की कायल
आँखों में घिरी शबनम[10] फुर्सत मुझे न दे

इस पैकरे–फ़नाह[11]को क्यों दे तालीमे–ज़ीस्त[12]
अकबा[13] की आरजू में कयामत मुझे न दे

जहां खुद दरख्त को भी पत्तों का पता न हो
इस दश्ते–माअमूरा[14] की फितरत[15] मुझे न दे

दोज़ख[16]से खल्क सहमे है खौफ़ फितरतन ये
होंगे वहाँ पे ज़ाहिद[17] जन्नत मुझे न दे

1. दुनिया का वातावरण 2. फैलाव 3. दुनिया 4. गम का ख्जाना 5. जीवन 6. छिप गई 7. बला की उदाहरण 8. तारे गिनते समय 9. स्फेद पत्थर की मूर्ति 10. ओस 11. नाशवान आकार 12. ज़िदगी की शिक्षा 13. मौत के बाद की ज़िन्दगी 14. शहरी जंगल 15. प्रकृति 16. नरक 17. तपस्वी

है वक्त वो मुकर्रर लगे आमदे फरिशता
अब दीद की भी शायद मोहलत मुझे न दे

है नूरे–चश्म[1]कायम तनवीरे–मय[2] के सदके
दे कसम भटकने की सूरत मुझे न दे

'अहसास' खैर माँगो सय्याद अब कफ़स[3] की
कैदे–वजूद[4] की तू नसीहत मुझे न दे

1. आँख का नूर 2. शराब की रौशनी 3. पिंजरा 4. अस्तित्व की कैद

=

कुछ इस तरह से उनकी आँखों से प्यार छलके
जिस तरह पैमानों[1] से मय दिलबहार छलके

की बेरुखी से तौबा जो की थी दिल्लगी में
आते ही पास आँसू जब ज़ार ज़ार छलके

भीगा है पसीने से कुछ इस तरह से चेहरा
शबनम से भीगे गुल से गोया निखार छलके

रेशम से गेसूओं में वो जासमीनी गजरा
जैसे स्याह शब में इक आबशार[2] छलके

गम न समायें दिल में तो उमड़ ही आयें आँसू
ज्यों बूँद अब्रे–तर[3] से बेइख्तयार छलके

वो मयकशी से मुझको रोकें तो कैसे रोकें
आँखों से खुद की वक्ते–मिन्नत ख़ुमार[4] छलके

'अहसास' दिल लौटाया कह कर बेकार तुमने
ले जा रहे फिर क्यों हो दिल का करार छल के

1. प्याले 2. झरना 3. भीगा हुआ बादल 4. नशा

=

आमद की मेरी है ये कुछ अहमियत ज़रा सी
महफिल में आ बसी है रूहानियत ज़रा सी

रहती यहाँ सकूँ[1] से कुछ तेरी भी खुदाई
करता अता जो हमको इ न्सानियत ज़रा सी

ले पाये न जतन से हम झूठ का सहारा
रिन्दों[2] को दी न उसने शैतानियत ज़रा सी

लगते हैं आज फिर से आसार कुछ कत्ल के
चेहरे से उनके झल्के मासूमियत ज़रा सी

बिलकुल न हो बुराई या कद्र अच्छाई की
हम काफिरों[3] की भी तो है अहमीयत ज़रा सी

न बहाये जाओ आँसू मय्यत[4] पे मेरी झूठे
है खबर यहां सबको है असलीयत ज़रा सी

मेहमां हैं कुछ तो ऐसे जिन्हें शौक मयकशी का
और कुछ मेरी भी नीयत है बदनीयत ज़रा सी

सब का हुआ मुआइना जो घर से मेरे निकले
आ कर मगर न पूछी खुद खैरीयत ज़रा सी

या तो ग़ज़ल है उम्दा जो सब हैं आज कायल
या असरदार अपनी है शख्सीयत ज़रा सी

सबकी रज़ा से दी है 'अहसास' तुमको फाँसी
हम में अभी है बाकी जमहूरीयत ज़रा सी

1. चैन 2. शराबी 3. भगवान को न मानने वाला 4. अर्थी

=

दिल ही दिल में हम प्यार करें मजबूर हुए हैं इस दिल से
कैसे उनसे इज़हार करें दस्तूर जहाँ के संगदिल[1] से

पल्कें कुछ शर्म से झुकीं झुकीं आँखों में हया के डोरे से
कुछ अलग नहीं वो आज लगे दुनिया की भीड़ में शामिल से

मरने से हमें इन्कार नहीं इक बार फैसला हो जाये
यूँ रोज़ ज़िबाह से क्या हासिल पूछें हम अपने कातिल से

ज्ब झूल गये हम फाँसी पे क्यों फरियादें बरबाद करें
जब डूब गई अपनी कश्ती क्या गर्ज़ हमें अब साहिल[2] से

न कोई अदावत[3] बुत से है न कोई गिला है काबे से
बस एक शिकायत उससे है जो दूर बहुत है हासिल से

था नाज़ हुस्न पे उनको कुछ कुछ जोशे–जवानी हमको भी
कैदे–पिंदार[4] थे दोनों ही दोनों ही फ़नाह से ग़ाफिल[5] से

अब तक तो बज़्म[6] खनकती थी रौनक थी कदहो–सुराही[7] की
यह दश्तो–कब्रस्ताँ[8] सा क्या 'अहसास' गये क्या महफिल से

1. पत्थर दिल 2. किनारा 3. दुशमनी 4. अह्म में कैद
5. उदासीन 6. महफिल 7. प्याला और सुराही 8. कब्रस्तान जैसा जंगल

=

दर तेरे से ले के चले आहो–फरियाद हम
सनमकदा[1] दर्द का करेंगे अब आबाद हम

मेरे कत्ल से निजात[2] उन्हें दर्दे–सर से है
और जुल्फ को असीर[3] हो गये आज़ाद हम

गिर्दाबे–इश्क[4] में हैं घूमते हुए हैरान
डूबते हुओं की सोच सोच कर तादाद हम

नाजुकी थी पास मेरे उन्हें दिल के साथ दी
सख्तियां उधर से मिलीं बने फरहाद हम

कब्र के लिए जगह मिली खुदा के नाम पे
दफ़न करेंगे वहां खुदा का ऐतिकाद[5] हम

लताफते–हुस्न[6]में है नज़ाकते–जज़्बा–इ–दिल
खेजे–इ–फन–इ नाजुकी[7] में हो गए ईज़ाद हम

फायदा किसे है 'अहसास' तेरी मौत से
खर्च और दफन पे करेंगे तेरे बाद हम

1. बुतखाना 2. छुटकारा 3. कैदी 4. इश्क का भँवर
5. विश्वास 6. सुन्दरता की सूक्ष्मता 7. नाजुक हुनर

=

ज़िन्दगी में ज़िन्दगी की आरजू तो हो
मेहरबां मगर वो मुझ पे फितना–खू[1] तो हो

हों न अगर शीरीं–सुखन[2] करें तकरार
मगर कोई इब्तदा–ए–गुफ़्तगू[3] तो हो

कोई न कोई तो अंजाम[4] पायेगी
कहीं न कहीं से दास्तां[5] शुरू तो हो

चार चिकनी चुपड़ी सुना बरगला तो लूँ
एक तरफ उनसे ज़रा सा अदू[6] तो हो

एक जू–ए–अश्क[7] मैं बहा के दिखा दूँ
कहीं जिगर में मेरे ज़रा लहू तो हो

चाहता तो हूँ कि आपको भी करूँ पेश
वाइज़े[8]–हजूर ज़रा फालतू तो हो

1. झगड़े की आदत वाला 2. मीठी बातें करें 3. बातचीत का आरम्भ 4. अन्त 5. कहानी 6. शत्रु
7. आँसूओं की नदी 8. धर्म प्रचारक

कैसे हो सके कि मिले न खुदा हमें
मगर दिल में आरजू–ए–जुस्तजू[1] तो हो

एक सू[2] ही सजदा खल्क क्यों करे
सुना है मौजूद आप चार सू तो हो

पा 'अहसास' जैसा इश्क में मुकाम
ज़रा शहर भर में बेआबरू तो हो

1. ढूँढने की इच्छा 2. तरफ

=

कभी खोना तो कभी पाना है
ज़िन्दगी इक क़िमारखाना[1] है

तैरना है तेरे खयालों में
तेरी यादों में डूब जाना है

ढूँढीए हम सा बावफा कोई
एक हम एक ये ज़माना है

मुस्करा कर नज़र चुरा तो ली
और कहिए कहाँ निशाना है

इक हजूमे–शमअ[2] की जद[3] में
क्या ये अदना सा परवाना है

थ्रसने फिर लगा है ज़ख्मे–दिल
फिर वही सिलसिला पुराना है

मज़े मे ं हुँ मैं चार काँधों पे
छिपाया कफन में पैमाना है

1. जुआखाना 2. शमाओं का झुरमट 3. निशाना

सराबे–हुस्न[1] है मुकामे–ख़ुदा[2]
बन्दगी दरम्यां वीराना है

लगाओ सुरमा उनकी आँखों में
चश्मे–बद[3] से अगर बचाना है

साफगोई है और आज़ाद खयाल
पास मेरे ये बस खज़ाना है

बद 'अहसास' भी इतना तो नहीं
सिवाय इसके कि दीवाना है

1. सुन्दरता की मृगतृष्णा 2. भगवान का ठिकाना 3. बुरी नज़र

=

आखरी ये करम[1] बस इक और फरमा जाईए
याद अपनी को भी मेरे साथ दफना जाईए

गर्ज़ हो तो जा मिलायें आँख ये शैतान से
यूँ निगार[2] ऐसे कि अपनों से भी शर्मा जाईए

आप को तो दिल का देना भी लगे अहसान सा
हम मगर ऐसे खुदा की मेहर ठुकरा जाईए

कफस[3] सोने का वहाँ और याँ पे फाकामस्तियाँ[4]
या तो मरिये घुटन से या मौत पे छा जाईए

फूल की हर पंखुड़ी से आ रही है ये सदा
ज़िन्दगी जितनी भी हो गुलशन को महका जाईए

है कमी मक्सद की वर्ना दिल में है इक वलवला
दास्ताने–कोहकन[5] इक और दोहरा जाईए

शहर में मशहूर घर जलने के बायस मैं हुआ
सुर्खियों में आप भी घर फूँक कर आ जाईए

डूबता सूरज मुझे 'अहसास' देता है पैग़ाम
डोर अब से वक्त की तारों को थमा जाईए

1. मेहरबानी 2. सुँदर 3. पिंजरा 4. भूखमरी 5. पहाड़ खोदने वाले (फरहाद) की कहानी

=

ख्वाहिश तो नज़रे–ख्वाहिशे–दिलदार[1] कर चुके
अब रंजो–गम खुशी की हदें प ार कर चुके

कैदे–नफ़स[2] का चाहिए हस्ती[3] को अब हिसाब
करना था जितना जिस कद्र ख्वार कर चुके

क्या सब्रो–ज़ब्त का बना अशकों से राब्ता[4]
वो टूट गये जब उन्हें तैयार कर चुके

बस हो न सकी ईदे–मुबारिक हमें नसीब
यों कितनी बार चाँद का दीदार कर चुके

जिस खुल्द[5] में हो शेखों[6] वाइज़ो को भी पनाह
उसके लिए खुदा से तकरार कर चुके

'अहसास' उसी जुल्फ की गिरफ्त सी लगे
जो जुल्फ हम सुखन में गिरफ्तार कर चुके

1. प्रीय की इच्छा की भेंट 2. साँस की कैद 3. प्राणी 4. सम्बन्ध 5. स्वर्ग 6. नेक आदमी

=

बड़ा सकून पायेगा दुश्मन गले लगाये जा
फूलों से कर दोस्ती काँटें यार बनाये जा

देख शमअ है जल रही और तबअ[1] मचल रही
जल ज़रा जल्वा दिखा यूँ ही न मंडराये जा

कर खुशगवारी की इल्तजा[2] दे गम गुसारी का वास्ता
शौक है पीने का अगर बहाने रोज़ बनाये जा

हीर जुलैखां कहां गईं शीरीं लैला नहीं रहीं
फस्ले–हुस्न है चन्द रोज़ यूँ ही न इतराये[3] जा

मैल दिलों पे है जमी शहर में पानी की कमी
जब तक कि इन्तज़ाम हो मय से काम चलाये जा

अपना दुनिया का असूल सर झुका जो हो रसूल
और मिले मजलूम तो उसको खूब सताये जा

है ये तकाज़ा वक्त का देख किसी को कामयाब
अन्दर जलन समेट ले जलवत[4] मुस्कराये जा

1. तबीयत 2. विनती 3. गर्वित हुए जा 4. सामने

आँखों में कितना प्यार था जब हमसे सरोकार था
शुक्रगुज़ार हो या न हो आँख तो न चुराये जा

वक्त है उनके पास कम कहाँ सुनेंगे मेरा गम
जब तक जान में जान है तड़पे छटपटाये जा

हुस्न का उसको है गरूर[1] हमको फकीरी का सरूर[2]
बख्श उसे संजीदगी मुझको न डोलाये जा

उसको पसंद इबादतें अपनी भी देख सयासतें
मुट्ठी में रख शैतान भी और खुदा रीझाये जा

बात सुखन की हो अगर कामिल[3] खुद को ज़ाहिर कर
समझ पड़े कुछ या न पड़े अपनी टाँग अड़ाये जा

रिन्दों को देना मस्तियां और बदी को पस्तियाँ[4]
और मिले 'अहसास' गर उसको दर्द थमाये जा

1. अभिमान 2. नशा 3. दक्ष 4. पराजय

=

वो तुम्हारी शोखियों को प्यार समझना
खुद को मगर फिर भी समझदार समझना

देख परवाने दीवानो ं में आ के देख
मिटने का है अगर खुमार समझना

ज़रूरते–अब्र[1] भी होगी सफरे–खिज़ां[2] में
कहाँ तक निभायेगी बहार समझना

बेवजह ही होगा कभी कभी दिल बेचैन
किसी दिल जले की वो पुकार समझना

हैं इनायतें[3] जो तसव्वर[4] में आये हैं
ऐ दिल तू इसी को दीदार समझना

दिल–फरेब रू[5] पे दिखेंगी मुसर्ररतें[6]
दिल का इन्हें कभी न करार समझना

रूठना मनाना चलन यूँ ही नहीं है
किस कद्र है किस पे इख्तयार समझना

परख दोस्तों की 'अहसास' हो आसान
हो न अगर दिल को दुशवार[7] समझना

1. बादल की आवश्यक्ता 2. पतझड़ 3. मेहरबानी 4. कल्पना 5. चेहरा 6. खुशियां 7. मुश्किल

=

रफता रफता खत्म हुआ इस ज़ीस्त[1] का दुश्वार सफ़र
रही तमन्ना मिले दोबारा फिर से ये इक बार सफ़र

जब तक दम में दम था आया हदे–नफस[2] तक साथ मेरे
हसरत भरी नज़र ये तरसे साथ चले उस पार सफ़र

रहा हमसफर सुख दुख में बेशक न कर पाया इमदाद[3]
हाथ छुड़ा मैं चला दूर तो रोया ज़ारो–ज़ार सफ़र

जब तक रही जवानी दिन पे साथ मेरे पुर–जोश चला
शाम ढली तो चूर थकावट से मुझ सा लाचार सफ़र

भेजे पाँच पीर[4] उल्झा कर ठग लायें मेरा ईमान
मुझको भटकाने के चक्कर में खुद हुआ ख्वार सफ़र

1. जीवन 2. ज़िन्दगी की सीमा 3. सहायता 4. काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार

तेरे गुलशन की कलियों से बन पाया न इक गजरा
होगा किस तरकीब से अब मेरा भी खुशबूदार सफ़र

फूल मेरे हिस्से के भी विछवा दो उनकी राहों में
हम तो आदी हैं कर लेंगे तय अपना पुरखार[1] सफ़र

दिल दौलत में बसा हो जिनका खौफ उन्हें हो रहज़न[2] से
दिल की दौलत ले हाथों में अपना कारोबार सफ़र

मंज़िल तक तो जा पहुँचेंगे मिले न मिले तेरा साथ
लेकिन होगा बिन तेरे 'अहसास' बड़ा दुश्वार[3] सफ़र

1. काँटों भरा 2. लुटेरा 3. कठिन

=

बेसबब कैसे ये की आज हिमाकत हमने
क्यों तुम्हें दिल में बसर की दी इजाज़त हमने

कल तक बचाये रखा हर बला से जिसे
क्यों नहीं आज भी की दिल की हिफाज़त हमने

उन्हीं के ज़ख्म की दिल ताब नहीं ला पाया
कभी था नाम दिया जिनको नज़ाकत हमने

अभी तो दर पे तेरे जिस्म ही जलाया है
अभी शुरू ही कहाँ की है बगावत हमने

कभी तो वो भी झुके आ हमारे सजदे में
एक–तरफा तो बहुत की है इबादत हमने

चार डींगों पे ही साकी ने हाथ रोक लिया
अभी तो की भी न थी तर्के–शराफत[1] हमने

कोई मजबूर अगर हो तो निकालें मतलब
क्यों 'अहसास' न पाली है ये आदत हमने

1. शराफत छोड़ना

=

जाते हुए लम्हों का रुक जाना मुश्किल है
दिलवर को अलविदा भी कह पाना मुश्किल है

आसाँ है बाँध लेना बहते हुए दरिया को
पर हिज्र[1] में अश्कों का थम पाना मुश्किल है

ये झुकती हुई घटाएं ये बहकी हुई हवाएं
मयखाने से उठ कर अब जाना मुश्किल है

वो मयकदे में आयें इन्सान ही बन जायें
यह बात फरिशतों को समझाना मुश्किल है

आसां है नासमझ को समझाना बात अपनी
समझे हुए को लेकिन समझाना मुश्किल है

इस आलमे–रंगीं[2] से उठना है बहुत मुश्किल
'अहसास' बिन तेरे भी जी पाना मुश्किल है

1. विरह 2. रंगीन संसार

=

लाज़िमी नहीं कि अल्ला का नाम ले
चाहिए कि गिरते हुओं को थाम ले

साकी ज़रा देख अन्जुमन[1] है परेशान
नज़रों से पिये या हाथों से जाम ले

कासिद[2] की नीयत का ऐतबार क्या
अपने आप आ कर दिल से पयाम[3] ले

दर्द मजलूम को दे कर खुशी मना
बद–दुआएँ दिल जलों की सुबह शाम ले

कायदे की छोड़ फायदे की बात कर
रूह की सज़ा दिमाग से इनाम ले

ज़िन्दगी से बढ़ के इख्लाक समझना
कौन 'अहसास' आप का मकाम ले

1. महफिल 2. पत्रवाहक 3. संदेश

=

हम से दुश्मनी का वर्क[1] फाड़ साकिया
मय बगैर जन्नत[2] उजाड़ साकिया

रोक लेना हाथ अगर बहकने लगूँ
ज़रा सी का मगर क्या बिगाड़ साकिया

कल शब[3] का हाल पूछ गड़े न उखाड़
उखड़े हुए को आज गाड़ साकिया

खोल दे सबू[4] का मुँह दिल खोल के
खुलेंगे दिमाग़ के किबाड़ साकिया

अब क्या बिगाड़ लेगी मलख़[5]फसल का
खिरमन[6] को खा गई है बाड़ साकिया

आज फक्त मयकशी के तलबगार हैं
छोड़ नज़रों की छेड़ छाड़ साकिया

1. पृष्ठ 2. स्वर्ग 3. रात्रि 4. शराब का वर्तन 5. टिड्डीदल 6. खेत

तुझको खुदग़र्ज़ दोस्तों की कसम है
कहीं तू भी जाये पल्ला झाड़ साकिया

तेरी एक मस्त नज़र की कमी खले
मय का तो हो गया जुगाड़ साकिया

मयकशी की बज़्म[1] 'अहसास' तश्नालब[2]
साकिया ये कैसा खिलवाड़ सा किया

1. महफिल 2. प्यासा

=

है ज़िन्दगी की कहानी मुसलसल[1]
फानी[2] मुसलसल रवानी[3] मुसलसल

शबे–फिराको–सितम[4] का जो पूछा
तो पैग़ाम आया तूलानी[5] मुसलसल

शमांअ का रुत्बा दिया जब से उनको
होती है आतिशफिशानी[6] मुसलसल

वादा है वाइज[7] जो मयखाने आओ
बातें करेंगे रूहानी मुसलसल

खतावार[8] थे सिर्फ दो चार लम्हे
कयामत तल्क लन्तरानी[9] मुसलसल

'अहसास' वलवल फरेबे–खुदा के
सदीयों से दुनिया दीवानी मुसलसल

1. लगातार 2. नाशवान 3. बहाव 4. जुदाई व जुल्म की रात
5. लम्बी 6. आग बरसाना 7. धर्म प्रचारक 8. गलती करने वाले
9. तू मुझे न देखेगा (जब आदमी गलती के कारण भगवान ने उससे कहा था)

=

सच तो यह है मुझे देख कर उन्हें हिकारत[1] होती है
यों कूछ लोगों को सच से इन्कार की आदत होती है

शामे–उमर में जुल्फों के साये से हमको क्या लेना
गर्म दोपहरी में ही ठंडी छाँव की चाहत होती है

ये माना कि याद खुदा की मुश्किल में ही आती है
लेकिन ग़म हद के अन्दर हो तभी इबादत[2] होती है

आयें मुकाबिल[3] वो तो हालत पतली दिल की हो जाये
और अगर वो रहें दूर तो दिल की शामत होती है

बात थी अपनी बात में कुछ जो बात कोई वो कर न सके
महफिल समझी हुस्न में कुछ वैसे ही नज़ाकत होती है

हुस्न पे मरना भी क्या मरना मर कर भी बदनामी है
हुस्न चाहिए मरने पे जैसे कि शहादत होती है

1. घृणा 2. पूजा 3. सामने

होती है फितरत[1] ज़ाहिल[2] लोगों की फित्नावारी[3] की
समझदार लोगों में तो बाअदब अदावत[4] होती है

कहते हैं कि हश्र[5] से पहले करेंगे न वो हमसे बात
इन्तज़ार अब है किस दिन कमबख्त कयामत होती है

दिखें रौशनी दिन की में 'अहसास' बहारें फूलों पे
रात की रानी की शब में खुशबू से शिनाखत होती है

1. प्रकृति 2. अनपढ़ 3. लोग 4. झगड़ा करना
5. शत्रुता 6. कयामत

=

सकी तेरे हाथ में कैसा जाम सुहाना लगता है
मुझ तक आने में लेकिन क्यों एक ज़माना लगता है

ऐ नसीम[1] मदमस्त सी खुशबू तूने कहां से पाई है
तेरा भी उनकी गलियों में आना जाना लगता है

साथ चलो तो दशत[2] बयावां[3] चमन की तरह महकेगा
लेकिन तेरे बिन गुलशन भी इक वीराना लगता है

तेरी बज़्म[4] के आगे है तौकीर[5] हमारी कुछ ऐसे
मस्त तरन्नुम[6] उम्दा नग़मा साज़ पुराना लगता है

शिद्दत[7] से चाहा कि कह दें जानां[8] से जो दिल में है
ऐसा करना महफिल में लेकिन बचकाना लगता है

सूरत उनकी फूलों जैसी और सीरत आतिश–अफशां[9]
उनकी महफिल में भँवरा भी इक परवाना लगता है

1. पवन 2. जंगल 3. सुनसान 4. महफिल
5. औकात 6. संगीत 7. ज़ोर से 8. महबूब
9. आग बरसाने वाली

ग़म्ज़ा[1] मग़रूरी[2] और शोखी शामिल उनकी फितरत में
और हमें भी कितना अच्छा नाज़ उठाना लगता है

उनके कहने से की तौबा और इनायत[3] पा भी ली
आज खुशी में उठ जायेगा फिर पैमाना लगता है

दैरो–हरम[4] में जो मिलतें हैं लगते हैं अंजाने से
मयखाने में हर चिहरा जाना पहचाना लगता है

कैसा होगा छोड़ के जाना इस रंगीली दुनिया को
उनकी महफिल से जाना ही बस उठ जाना लगता है

जिसको कहे हकीकत दुनिया एक भरम सा मुझे लगे
जो असलियत है लोगों को इक अफसाना लगता है

तलब किया 'अहसास' उन्होंने बेगारी करवाने को
आज खुशी से मर जायेगा यह दीवाना लगता है

1. हुस्न की अदायें 2. अहँकार 3. कृपा 4. मन्दिर और मस्जिद

=

हँसने वालों को हँसने दो रोने वालों का ग़म न करो
बेसर्फा[1] फिक्रे–दुनिया में तुम लुत्फे–जवानी[2] कम न करो
जब तक लम्हात[3] वसल[4] के हैं क्यों याद करें शामे–हिज्रां[5]
आयेगी कज़ा[6] जब आयेगी तुम आँख अभी से नम न करो

=

है गनीमत उनको अब तक अहद[7] अपना याद है
फिर भी ऐ दिल किस लिए तू इस कद्र नाशाद[8] है
आये वो 'अहसास' निभाने वादा मेरे जनाज़े पे
अब तक आँखों मे लेकिन वो जज़्वा–इ–बेदाद[9] है

=

1. फिजूल 2. जवानी का आनन्द 3. पल 4. मिलन 5. विरह की शाम 6. मौत 7. वादा 8. उदास
9. निष्ठुरता का भाव

दिल मेरे को कर गये हैं बेकरार रूठ कर
मिले क्या है उनको मुझसे बार बार रूठ कर
इब्तदा–इ–इल्तजा[1] में वक्त मैने जो लिया
जान लिया मुझ पे अपना इख्तयार रूठ कर

=

कुछ हमको तो वो आ न सका वो क्या कहते हैं सलीका सा
की खर्च दौलते–दिल देखा जब लब पे तबस्सुम[2] फीका सा
खिरका[3] तसबीहो[4]–सज्जादा[5] 'अहसास' सजा पहुँचे दर पे
जब मिलने लगी खैराते–दिल तो पास न था कोई कासा[6]

=

1. मिन्नतों की शुरुआत 2. मुसकराहट 3. नमाज़ पढ़ने की चटाई
4. माला 5. चोला 6. भिक्षा पात्र

ये पुरकारी[1] ये होशियारी अच्छी तो नहीं है यारों से
जिनको इश्के–बादे–बहारी[2] वाकिफ होंगे वो निगारों[3] से
अन्दाज़े–गुफतगू[4] गुलअफशां[5] 'अहसास' तेरे बिन है सबसे
है सचमुच गर गफलत–शिआरी[6] तो बाज़ आ जाओ इशारों से

=

मुझको वो समझते हैं जैसे कि लिबास पुराना हो जाये
तौहीने–इश्क से बेहतर है इक गोर[7] ठिकाना हो जाये
'अहसास' थमे न मेरे आँसू मरने के बाद भी यों गोया
बहता भी रहे आबे–दरिया[8] कश्ती भी रवाना हो जाये

=

1. चलाकी 2. बहार की वायु से प्रेम 3. फूल पत्तियां 4. बातचीत का अन्दाज़ 5. फूल बरसाने वाला
6. उदासीनता का भाव 7. कब्र 8. दरिया का पानी

फितरत[1] ही मिली जब शर्मीली इज़हार इशारे क्या होते
दिल बिसमिल[2] हो भी तड़पा न तो आप हमारे क्या होते
था बह्रे–हुस्न[3] भी अरमां भी जुर्रत का मगर हम क्या करते
जो कूद सके न दरिया में पार बेचारे क्या होते

=

सौ जुल्म करे फुरकत की शब[4] आखिर तो सबर ही होता है
सीने में तमन्ना सिसके जब अरमां पे जबर ही होता है
'अहसास' वो तेरे हो जायें ऐ हसरत[5] रहना दिल में ही
कितनी भी हसीं हो बज़्म वोमें–तरब[6]घर आखिर घर ही होता है

=

1. प्रकृति 2. घायल 3. सुन्दरता का सागर 4. विरह की रात
5. इच्छा 6. आनन्द की महफिल

इश्क में सुनते हैं होती है नाहक ख्वारी बड़ी
इज़्ज़ते–इन्साँ को भी है कहाँ पायदारी बड़ी
हुस्न पे जागीरदारी अब बुते–काफ़िर[1] की है
है कहाँ 'अहसास' तेरी वो जिगरदारी बड़ी

=

कोशिशें कर यों कि कोई इन्कलाब आने लगे
भर सदा[2] में असर जो मुर्दों को तड़पाने लगे
ऐ खिरदे–इन्सान[3] पा दामे–खुदा[4] से अब निजात
चाँद तारों पर फतह 'अहसास' अब पाने लगे

=

1. भगवान से भी ऊपर समझने वाले 2. पुकार 3. इन्सान की समझ
4. भगवान के चंगुल से

उठा है ठंडी आहों का धुआं दिल के चिराग से
करूँ अब कैसे हल मैं हर मसला ठंडे दिमाग से
लगाती बर्फ में 'अहसास' न तकदीर गर ठंडी
तो पड़ती ठंड क्यों लोगों को मेरे घर की आग से

=

खो गया कातिल मेरा चेहरे मेरे के जलाल[1] में
ज़ब्त[2] से घबरा गया था यकीं जिसे न मलाल[3] में
गर्मी–ए–आहो–फुगां[4] से पिघलते गर तुम नहीं
जानते हैं मुस्कराना हम भी अब हर हाल में

=

1 आभा 2. बर्दाशत 3. अफसोस 4. आहों की गर्मी

करम[1] गर नहीं तो कुछ सज़ा ही दीजिए
ये मगर क्या कि बस भुला ही दीजिए
जो भी मिले दर से है फकीर को कबूल
और कुछ नहीं तो बददुआ ही दीजिए

=

वफा ही तुम्हारा अब काम हो गया
फिर भी मगर नाम बदनाम हो गया
कहाँ तक चलोगी साथ बदनसीबीयो
ज़िन्दगी का सफ़र तो तमाम हो गया

=

जब इख्तयार सब उनके हैं तो क्या पूछें कि क्या है ये
जब ताकत हाथ हुस्न के हो तो ख़िरद[2] के लिए सज़ा है ये
'अहसास' उठायें नाज़ मगर फिर भी तोहमत बेअदबी की
आदाब मेरे का खुद लेकिन न दिया जवाब अदा है ये

=

1. मेहरबानी 2. समझ